दलितों व शोषितों का पाक्षिक पत्र

हमायती

सम्पादक–डॉ0 सोहनपाल सुमनाक्षर

❑ वर्ष 64 ❑ अंक-23 ❑ दिल्ली ❑ सितम्बर (प्रथम) ❑ मूल्य : 2 रु.

अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सुमनाक्षर जी का 87वां जन्म दिवस उड़ीसा के सम्बलपुर में मनाया जायेगा

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर जी का 87वां जन्मदिन 6 अक्तूबर 2026 को सम्बलपुर (उड़ीसा) में बनाया जायेगा। अकादमी के उड़ीसा राज्य के प्रदेशाध्यक्ष श्री निहाल सिंह, जिनके संयोजन में यह कार्यक्रम आयोजित हो रहा है, सम्मेलन की अध्यक्षता करेंगे। सम्मेलन में डा. सुमनाक्षर मुख्य अतिथि और अकादमी के राष्ट्रीय महामंत्री प्रो. जय सुमनाक्षर विशिष्ठ अतिथि होंगे। सम्मेलन में भाग लेने के लिए प्रदेश के दलित साहित्यकार, कलाकार और सामाजिक कार्यकर्त्ताओं को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया है।

अकादमी की उड़ीसा प्रदेश की शाखा की प्रवक्ता श्रीमती मोमीना खाटून ने बताया कि इस सम्मेलन में प्रदेश के साहित्यकारों के अतिरिक्त सम्मेलन के कार्यक्रम में अन्य प्रदेशों के प्रतिनिधि भी बड़ी संख्या में शामिल होंगे। राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सुमनाक्षर ने जीवन के 86 साल राष्ट्र सेवा, समाज सेवा व साहित्य सेवा में अर्पित किये हैं। इसलिए इस अवसर पर उड़ीसा की कलाकारी से पूर्ण अंगवस्त्र, जन दिवस की शील्ड और पश्मीना शाल प्रदान कर अभिनन्दन किया जायेगा। इस अवसर पर सम्मेलन में उनके आगामी स्वस्थ जीवन की भी कामना की जायेगी ताकि वह राष्ट्र, समाज और साहित्य की और सेवा कर सकें।

8 अक्तूबर, 2026 को दिल्ली में जन्मदिवस समारोह

भारतीय दलित साहित्य अकादमी, दिल्ली प्रदेश शाखा के तत्वावधान में 8 अक्तूबर, 2026 को अकादमी के मुख्यालय में अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर का 87वां जन्म दिवस मनाया जायेगा। इस जन्म दिवस आयोजन में दिल्ली यूनीवर्सिटी के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. श्योराज सिंह 'बेचैन' मुख्य अतिथि होंगे। प्रसिद्ध साहित्यकार प्रो. हंसराज सुमन समारोह में विशिष्ठ अतिथि होंगे।

अकादमी के दिल्ली प्रदेशाध्यक्ष डा. राजमल सिंह 'राज' ने बताया कि इस अवसर पर दिल्ली विश्वविद्यालय के अनेक विद्वान और सामाजिक कार्यकर्त्ता राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर के 87वें जन्म दिवस पर केक काटकर खुशी बनायेंगे और उनके शतायु होने की शुभकामनायें करेंगे ताकि उनके आगामी सफल–स्वस्थ जीवन में दलित साहित्य विश्वव्यापी बनकर साहित्य के क्षेत्र में प्रमुखता से अपनी पताका फहरा सके।

राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सुमनाक्षर जी का 87वां जन्म दिवस 11 अक्तूबर, 2026 को बीकानेर (राजस्थान) में मनाया जायेगा

भारतीय दलित साहित्य अकादमी की राजस्थान प्रदेश शाखा भारतीय दलित साहित्य अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर जी का 87वां जन्म दिवस बीकानेर (राजस्थान) में 11 अक्तूबर, 2026 को आयोजित कर रही है। इस अवसर पर राजस्थान प्रदेश के साहित्यकार और सामाजिक कार्यकर्त्ताओं के अलावा अन्य प्रदेशों के दलित साहित्यकार और समाजसेवी भाग लेकर डा. सुमनाक्षर को जन्मदिवस की बधाई देंगे।

अकादमी की राजस्थान शाखा के अध्यक्ष प्रो. आत्माराम उपाध्याय सम्मेलन की अध्यक्षता करेंगे। अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर सम्मेलन में मुख्य अतिथि होंगे। अकादमी के राष्ट्रीय महामंत्री प्रो. जय सुमनाक्षर सम्मेलन में विशिष्ट अतिथि होंगे।

जन्म दिवस समारोह के आयोजक अकादमी की राजस्थान शाखा के महामंत्री श्री भोमाराम बोस ने बताया कि डा. सुमनाक्षर का 87वां जन्मदिन सतरंगी पगड़ी बांध व शाल–शील्ड भेंट करके राजस्थान परम्परा के अनुसार रंगारंग कार्यक्रम के रूप में मनाया जायेगा। इस सम्मेलन में राजस्थान प्रदेश के अलावा अन्य प्रदेशों के साहित्यकार, कलाकार, समाजसेवी भाग लेकर डा. सुमनाक्षर की दीर्घायु की कामना करेंगे जिनकी वजह से दलित साहित्य के क्षेत्र राजस्थान का अनूठा नाम है। प्रो. बाबूलाल निर्मल ने आशा व्यक्त की कि यह सम्मेलन गत वर्ष 2025 से भी ज्यादा उत्कृष्ट होगा। •

सम्पादकीय

देश–विदेश में 6 अक्तूबर को मनाया जायेगा–'दलित साहित्य दिवस'

*** डा. सोहनपाल सुमनाक्षर**

8वां दलित साहित्य दिवस 6 अक्तूबर, 2026 को देश–विदेश में मनाया जायेगा। इसकी शुरुआत 6 अक्तूबर 2019 को कुरुक्षेत्र (हरियाणा) में की गई थी, जहां अकादमी की हरियाणा प्रदेश शाखा ने पहला अन्तर्राष्ट्रीय दलित साहित्य दिवस आयोजन किया गया। इस अवसर पर देश के अलावा नेपाल, यू.के. इंगलैंड, अमेरिका आदि देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। तब से 6 अक्तूबर से शुरू होकर दलित साहित्य दिवस पखवाड़े के रूप में भारतीय दलित साहित्य अकादमी की सभी राज्य शाखायें इसका आयोजन करती हैं। इस अवसर पर दलित साहित्य पर विशेष चर्चा के अलावा दलित साहित्य पर शोध करने वाले अभ्यार्थियों व साहित्यकारों का सम्मान भी किया जाता है। गत वर्ष 2025 में अकादमी की राजस्थान प्रदेश शाखा ने दलित साहित्य दिवस का आयोजन जसलमेर में किया था जिसमें हजार से ऊपर दलित साहित्यकार और दलित समासेवियों ने भाग लिया था।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर जी का 6 अक्तूबर, 2026 को 87वां जन्मदिन है जिन्होंने भारतीय दलित साहित्य अकादमी की 1984 में स्थापना की थी और इसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुंचाया है। इसलिए 6 अक्तूबर को प्रतिवर्ष डा. सुमनाक्षर जी के जन्मदिन 'दलित साहित्य दिवस' के रूप में भी मनाया जाता है। इस वर्ष 6 अक्तूबर, 2026 को भारतीय दलित साहित्य अकादमी की उड़ीसा प्रदेश शाखा जहां उनका 87वां जन्म दिवस सुप्रसिद्ध शहर सम्बलपुर (उड़ीसा) में मना रही है वहीं इस दिन को 8वें दलित साहित्य दिवस के रूप में बड़ी शान–शौकत के साथ आयोजित कर रही है। डा. सुमनाक्षर विशेष अतिथि के रूप में इस अवसर पर उपस्थित होंगे जो देश–विदेश में दलित साहित्य का डंका बजाकर इसकी पताका स्कूल, कालेज, विश्वविद्यालयों में भी फैला रहे हैं। उनका धन्यवाद ज्ञापन के साथ इस अवसर पर उनका अभिनन्दन भी किया जायेगा।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी, राजस्थान प्रदेश शाखा डा. सुमनाक्षर जी का 87वां जन्मदिन दलित साहित्य दिवस के रूप में बीकानेर में आयोजित कर रही है। इस शुभ अवसर पर देश के प्रमुख दलित साहित्यकार और समाजसेवी कार्यक्रम में शामिल होकर डा. सुमनाक्षर के दीर्घायु की कामना के साथ–साथ दलित साहित्य की अभिवृद्धि का कार्यक्रम भी बनायेंगे। इस अवसर पर दलित साहित्यकारों,

(शेष भाग... पृष्ठ 3 पर)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के प्रकाशन

विश्व धरातल पर दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अंधा समाज और बहरे लोग	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
सिन्धु घाटी बोल उठी	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अब नहीं रहेंगे हाशिये पर	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अम्बेडकर शतक	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
विश्व विभूति डा. अम्बेडकर	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
दलित लेखक परिचय ग्रंथ (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	250/–
बुद्धा दू अम्बेडकर (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	150/–
दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
अम्बेडकर दर्शन	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
हमारे संत और समाज सुधारक	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
धर्म और समाज	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
आदिम जाति चमार (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	300/–
दलित उद्घोष	डा. सुमनाक्षर	100/–
दलित साहित्य की हुंकार–सात समन्दर पार	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
युगपुरुष बाबू जगजीवनराम	डॉ. सुमनाक्षर	200/–
प्राचीन आदिम जाति वाल्मीकि (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	100/–
मेरे साक्षात्कार–मेरा जीवन संघर्ष	डा. सुमनाक्षर	300/–
सभ्यता, संस्कृति, समाज और साहित्य	आचार्य गुरुप्रसाद	100/–
भारत रत्न डा. बी.आर. अम्बेडकर	राजमल 'राज'	100/–
मूल भारती से दलित	राजमल 'राज'	100/–
अम्बेडकरवाद बनाम सामाजिक परिवर्तन	राजमल 'राज'	100/–
दलित साहित्य–दशा और दिशा	डा. माता प्रसाद	200/–
दलित साहित्य से सामाजिक परिवर्तन	डा. माता प्रसाद	100/–
भारत की गुलामी के 22 सौ साल	प्रदीप कुमार मौर्य	250/–
बौद्ध धर्म–गया से अयोध्या तक	प्रदीप कुमार मौर्य	120/–
गांधी, अम्बेडकर और दलित	प्रदीप कुमार मौर्य	100/–
हम एक हैं	डा. माता प्रसाद	100/–
रैदास से संत शिरोमणि गुरु रविदास	डा. माता प्रसाद	100/–
ताकि सनद रहे	डा. सुमनाक्षर	200/–
Who's who Dalit Writers in India	Dr. Sumanakshar	500/-
Who's Who–International & National Awardees of B.D.S.A.	Dr. Sumanakshar	500/-

पुस्तक मंगाने के लिए अग्रिम राशि निम्नलिखित अकादमी के खाते में भेजें

Bharatiya Dalit Sahitya Akademi
A/c No. - 2592101012292 (Canara Bank)
IFSC - CNRB0002592
Branch - Model Town, Delhi

सम्पादकीय पेज 1 का शेष....देश-विदेश में 6 अक्तूबर को मनाया जायेगा-'दलित साहित्य दिवस'

कलाकारों और समाज सेवियों का सम्मान भी किया जायेगा।

दलित साहित्य दिवस पखवाड़े के अन्तर्गत 8 अक्तूबर, 2026 को अकादमी की दिल्ली शाखा की ओर से अकादमी के मुख्यालय पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर भारतीय दलित साहित्य अकादमी के तत्वावधान में संचालित किये जाने वाले विशेष कोर्स–दलित साहित्य रत्न, दलित साहित्य भूषण और दलित साहित्य प्रभाकर का भी लोकार्पण डा. सुमनाक्षर जी के द्वारा किया जायेगा। ये कोर्स दलित साहित्य अभिवृद्धि के लिए संचालित किये जा रहे हैं। अकादमी के पदाधिकारियों के लिए यह कोर्स अनिवार्य रूप से ग्रहणिया है ताकि दलित साहित्य विधा का ज्ञान सभी साहित्यकारों के पास हो।

दलित साहित्य दिवस पखवाड़ा भव्यता के साथ पूरे देश में मनाया जा रहा है जो हमारी जागरूकता का परिचायक है कि दलित साहित्य अपनी निर्माण की गति से सही दिशा की ओर बढ़ रहा है।

अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. सोहनपाल सुमनाक्षर जी के 87वें जन्म दिवस और दलित साहित्य दिवस के 8वें वर्ष के शुभावर पर मुख्यालय में निम्नलिखित महानुभावों के बधाई सन्देश प्राप्त हुए हैं, उनको भी अग्रिम बधाई–

<u>डा. सुमनाक्षर के 87वें जन्म दिवस पर प्राप्त शुभ कामना सन्देश</u>

1. प्रो. श्योराज सिंह 'बेचैन', पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
2. डा. काली चरण 'स्नेही', पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
3. डा. इस्पाक अली, प्रिन्सिपल, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार समिति, बैंगलोर, कर्नाटक
4. डा. हरि सिंह, महामंत्री, नागरी लिपि प्रचार समिति, भारत (नई दिल्ली)
5. प्रो. जयपाल सिंह, प्रदेशाध्यक्ष–उत्तराखंड प्रदेश
6. श्री गंगादास बासिया, प्रदेशाध्यक्ष, चंडीगढ़, यू.टी.
7. श्री रमेश कुमार भारती, प्रदेशाध्यक्ष, पंजाब प्रदेश
8. डा. विजय भगत, महामंत्री, भारतीय दलित साहित्य अकादमी, जम्मू–कश्मीर
9. डा. लालती देवी, प्रदेशाध्यक्ष–भारतीय दलित साहित्य अकादमी, उत्तर प्रदेश
10. श्री रामवृक्ष राम चकपुरी, एडवोकेट–प्रदेशाध्यक्ष, बिहार प्रदेश, भारतीय दलित साहित्य अकादमी
11. श्री मट्टा प्रभात कुमार, प्रदेशाध्यक्ष, आन्ध्र प्रदेश
12. श्री जी.पी. उपाध्याय, प्रदेशाध्यक्ष, अरुणाचल प्रदेश
13. श्री बी.एल. रविदास, प्रदेशाध्यक्ष, आसाम प्रदेश
14. श्री जी.आर. बंजारे 'ज्वाला', प्रदेशाध्यक्ष, छत्तीसगढ़ प्रदेश
15. डा. राजमल सिंह 'राज', प्रदेशाध्यक्ष, दिल्ली प्रदेश
16. श्री शम्भू भाऊ बांडेकर, प्रदेशाध्यक्ष, गोवा प्रदेश
17. श्री जे.एम. जडेजा, प्रदेशाध्यक्ष, गुजरात प्रदेश
18. श्री गुरदयाल सिंह मोरवला, प्रदेशाध्यक्ष, हरियाणा प्रदेश
19. श्री तरसेम भारती, प्रदेशाध्यक्ष, हिमाचल प्रदेश
20. डा. राजूराम, प्रदेशाध्यक्ष, झारखंड प्रदेश
21. श्री एचएम. कुन्दगी, प्रदेशाध्यक्ष, कर्नाटक प्रदेश
22. श्री टी. बालाकृष्णन, प्रदेशाध्यक्ष, केरलम प्रदेश
23. श्री पी.सी. बैरवा, प्रदेशाध्यक्ष, मध्य प्रदेश, भारतीय दलित साहित्य अकादमी
24. श्री आनन्द गवली, एडवोकेट, प्रदेशाध्यक्ष, महाराष्ट्र प्रदेश
25. डा. आर.के. गुनाचन्द्रा, प्रदेशाध्यक्ष, मणिपुर प्रदेश
26. श्री वाई. महेन्द्र सिंह, स्टेटकोआरडीनेटर, मणिपुर
27. श्री खईडेम कान्ता सिंह, प्रदेशाध्यक्ष, मिजोरम प्रदेश
28. श्री प्रेमराज नियाल उर्फ निहाल सिंह, प्रदेशाध्यक्ष, उड़ीसा प्रदेश
29. डा. श्रीमती पी वासुगी जयरमन, प्रदेशाध्यक्ष, पांडिचेरी, यू.टी.
30. स्वामी आत्माराम उपाध्याय, प्रदेशाध्यक्ष, राजस्थान प्रदेश
31. श्री शेखर सेवा, प्रदेशाध्यक्ष, सिक्किम प्रदेश
32. डा. सी.पी. देसी, प्रदेशाध्यक्ष, तमिलनाडु प्रदेश
33. डा. महेन्द्र वर्मा, प्रदेश महामंत्री, तमिलनाडु प्रदेश
34. इंजी. एनबी. बिस्वास, प्रदेशाध्यक्ष, त्रिपुरा प्रदेश
35. डा. जितेन्द्र मनु, एडवोकेट, प्रदेशाध्यक्ष, तिलंगाना प्रदेश
36. डा. पीतम्बर दास, असिस्टेंट प्रोफेसर (फिलोसपी), काशी यूनिवर्सिटी, वाराणसी
37. श्री अशोक कुमार दास, प्रदेशाध्यक्ष, प. बंगाल प्रदेश
38. श्री पी. विष्णुमूर्ति, अध्यक्ष दक्षिण भारत राज्य समिति, बी.डी.एस.ए
39. श्री चेलुवाराजू, जनरल सेक्रेट्री, दक्षिण भारत राज्य समिति, बी.डी.एस.ए.
40. श्री बबनराव घोलप, पूर्व सामाजिक कल्याण मंत्री, महाराष्ट्र प्रदेश
41. डा. एम.एल. रंगा, पूर्व स्वास्थ मंत्री, हरियाणा प्रदेश
42. डा. सुरेन्द्र कुमार सेलवाल, नेशनल सेक्रेट्री, भारतीय दलित साहित्य अकादमी
43. डा. सुन्दरलाल आर्य, अध्यक्ष, पोड़ी गढ़वाल मंडल, भारतीय दलित साहित्य अकादमी
44. डा. सुभाष कानाडे, नेशनल को–आरडीनेटर (कर्नाटक)
45. श्री तीरथ तोंगड़िया पंजाब स्टेट को–आरडीनेटर, भारतीय द. साहित्य अकादमी•

• विशेष लेख

डा. अम्बेडकर और मानवाधिकार

• डा. सुशील कुमार बैरवा

डा. अम्बेडकर भविष्य–द्रष्टा थे। उन्होंने 1954 में पंडित नेहरू को सचेत कर दिया था कि चीन विश्वसनीय नहीं है, क्योंकि जो लोग हमला करने के आदी हैं, वे जरूर घात लगाने की टोह में रहेंगे और अवसर का लाभ उठाने में कभी चूक नहीं करेंगे। डा. अम्बेडकर बिखरे हुए समाज को एकसूत्र में बाँधना चाहते थे, लेकिन पंडित नेहरू की व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षाओं को देखकर उन्हें मार्गदर्शन भी देना चाहते थे।

भारत में मानवाधिकारों का इतिहास लम्बा और उतार–चढ़ाव का रहा है। वास्तव में भारतीयों को नागरिक अधिकार प्राप्त नहीं थे। हमारी संस्कृति और परम्परा ऐसी रही है जहां 'सती–प्रथा', 'बाल– विवाह', 'बहुविवाह प्रथा' आदि कुरीतियां प्रचलित थीं और जाति प्रथा, अस्पृश्यता जैसी बुराइयां आमतौर पर व्याप्त थीं। गुलामों का व्यापार होता था।

डा. अम्बेडकर 'आधुनिक मनु' भी थे। वे हिन्दू धर्म की सामाजिक व्यवस्था का उद्धार करन चाहते थे। डा. अम्बेड़कर परम्पराओं को तोड़कर समतावादी समाज की स्थापना करना चाहते थे। वे चाहते थे कि हिन्दू अपनी जाति–व्यवस्था पर सोचें और उसमें आवश्यक सुधार करने के लिए स्वस्थ मन से तैयार हों। लेकिन डा. अम्बेडकर की एक भी नहीं चली।

डा. अम्बेडकर ने अपने दर्शन में हिन्दू धर्म का विरोध अवश्य किया है, लेकिन उन्होंने मानवता को या मानवतावादी दर्शन को सहर्ष गले लगाया। डा. अम्बेडकर ने अछूतों के कल्याण के लिए मानवतावादी स्वरूप को अपनाया है। डा. अम्बेडकर अछूतों के साथ–साथ सम्पूर्ण मानव की भलाई करना चाहते थे। इसलिए उन्होंने समतावादी एवं मानवतावादी समाज की कल्पना की।

डा. अम्बेडकर ने मानवाधिकारों से वंचित लोगों को मानवाधिकार सुलभ कराने के लिए भरसक प्रयास किए। समाज के वंचित, हाशिए पर रहने वाले लोगों को स्वतंत्रता और समानता युक्त जीवन देने लिए डा. अम्बेडकर सदैव प्रयासरत रहे। महिलाओं के प्रसूति अवकाश, मजदूरों के लिए काम के घण्टे निर्धारित कराने, अछूत वर्ग को समानता का अधिकार दिलाने, उन्हें मंदिरों में प्रवेश कराने सहित अनेक कार्य किए, जिनके बल पर उनके व्यक्तित्व का निर्माण हुआ। 'हिन्दू कोड बिल' हिन्दू–समाज में वर्षों से छाई मलिनता और अयोग्यताओं को खत्म करने का कानून था, जो तत्कालीन कट्टर सांसद, धर्मावलम्बियों के कारण संसद में पारित नहीं हो सका। इससे दुखी होकर डा. अम्बेडकर ने देश के प्रथम कानून मंत्री के पद से त्यागपत्र दे दिया था। हालांकि यह भी एक सच्चाई है कि डा. अम्बेडकर द्वारा निर्मित हिन्दू कोड बिल टुकड़ों में पारित हुआ, जिससे यह माना जा सकता है कि डा. अम्बेडकर को भारतीय सभ्यता और संस्कृति की कितनी अधिक समझ थी और उसमें छाए विकार और विकृतियों को वो दूर करना चाहते थे। हिन्दू कोड बिल के माध्यम से वे हिन्दू–समाज में भी विवाह, तलाक, विवाह–विच्छेद पिता की सम्पत्ति में पुत्री का हिस्सा सहित अन्य नियम बनाना चाहते थे। उन्होंने अपने जीवनकाल में वंचितों को समाज की मुख्यधारा में लाने के लिए अनेक मोर्चे पर संघर्ष किया। समाज के वंचित वर्गों को मानवाधिकार सुलभ कराने के लिए उन्होंने दो प्रकार से कार्य किए। पहला स्वयं संघर्ष करके, अंग्रेजों पर दबाव बनाकर, सत्याग्रह या समझाने का रास्ता अपनाकर कट्टपंथियों के लिए हृदय परिवर्तन करके वंचितों के हितों को रक्षा की। दूसरा आजादी के बाद भारतीय संविधान के प्रारूप समिति के अध्यक्ष के रूप में संविधान की प्रस्तावना में सामाजिक, राजनीतिक समानता का उल्लेख कराया जो संविधान की आत्मा मानी जाती है।

सहस्राब्दि पुरुष के रूप में सम्मान प्राप्त महात्मा गांधी मानवाधिकार का हनन रोकने वाले अग्रणी नेता माने जाते हैं। शुरू में दक्षिण अफ्रीका में और बाद में भारत में उन्होंने ऐसे करोड़ों लोगों के लिए नए युग का सूत्रपात किया जो बुनियादी मानवाधिकारों से वंचित थे। इस तरह गांधी जी ने शोषित मानवता की आवाज बुलंद करने के लिए एक संगठित आंदोलन शुरू किया। उन्होंने लोगों का आह्वान किया कि वे अपने अधिकारों को पाने के लिए निर्भय होकर बहादुरी के साथ संघर्ष करें।

डा. अम्बेडकर ने अपनी सामाजिक न्याय की धारणा के अनुरूप, उन सामाजिक न्याय के सिद्धांतों को स्वीकार नहीं किया, जिन्हें उन्होंने वर्ण–व्यवस्था, प्लेटो की स्कीम, अरस्तू के चिन्तन, नीत्शे के विचार, दैविक–कानून, मध्यकालीन दृष्टिकोण, मार्क्सवादी सर्वहारा समाजवाद और गांधी के सर्वोदय समाज में अन्तर्निहित पाया। इन सुपरिचित सिद्धांतों को डा. अम्बेडकर ने क्यों नहीं माना? क्या ये सिद्धांत पददलित, कमजोर और पिछड़े वर्गों के हित में नहीं थे? ये कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न हैं, जिनके उत्तर यहां डा. अम्बेडकर के दृष्टिकोण से प्रस्तुत हैं। डा. अम्बेडकर का मानना था कि वर्ण–व्यवस्था में स्वतंत्रता, समता और भ्रातृत्व के आदर्शों के लिए कोई स्थान नहीं है। उसमें सामाजिक–असमानता का पोषण और मानव व्यक्तित्व की गरिमा का पतन होता है। उसमें उन लोगों विशेषकर शूद्र दलितों की आर्थिक सुरक्षा का कोई प्रबंध नहीं है, जो ब्राह्मण वर्ग से निम्न स्तर पर आते हैं। इसलिए डा. अम्बेडकर ने वर्णाश्रम धर्म के सम्पूर्ण सामाजिक–अन्याय के संरचनात्मक एवं कार्यात्मक ढांचे को अस्वीकृत कर दिया और कहा कि सामाजिक न्याय का जो सार तत्व है, वर्णाश्रम धर्म उसका प्रतिरोधी है। इन्हीं कारणों से जैसा कि डा. अम्बेडकर ने सोचा, प्लेटो की स्कीम असफल रही, उससे सार्वजनिक वर्गीकरण तो नितांत बनावटी सिद्ध हुआ। मानव स्वभाव के रहस्यों को प्लेटो समझने में असमर्थ रहा। इस प्रकार वर्गाधारित सामाजिक न्याय की धारणाओं को निश्चित करने में, वर्ण तथा प्लेटो, दोनों ने 'सामाजिक असमानता' या 'भेदभाव' को

अन्तर्निहित कर दिया। श्रेष्ठ वर्ग के अलावा अन्य वर्गों के लोगों पर अनेक सीमाएं एवं निर्योग्यताएं थोप दीं। इस प्रकार हम देखते हैं कि डा. अम्बेडकर ने मानवधिकार से वंचित लोगों को मानवाधिकार सुलभ कराने के लिए भरसक प्रयास किए। उनकी भूमिका देश में कुछ भी रही हो, वे गवर्नर जनरल की कार्य–कारिणी के सदस्य हो, या बम्बई विधान परिषद् के श्रम मंत्री या फिर भारतीय संविधान की प्रारूप समिति के अध्यक्ष के रूप रहे हों, उन्होंने हर जगह मानवाधिकार युक्त समाज निर्माण की बात कही। उनके जीवन का चिंतन समाज के आखिरी व्यक्ति को लाभ या उसके जीवन में सुधार करने वाला होता था। वे समाज के पीड़ित, प्रताड़ित, वंचित, उपेक्षित, स्त्री, मजदूर और शोषित वर्ग के हितैषी रहे। उन्होंने समाज के कमजोर वर्गों को आह्वान करते हुए कहा कि 'बलि हमेशा बकरे की दी जाती है, इसलिए शेर बनो, शेर की कभी भी बलि नहीं दी जाती।'

इसी प्रकार डा. अम्बेडकर ने जिस तरह विभिन्न सामाजिक उद्देश्यों जैसे अस्पृश्यता उन्मूलन और मंदिरों में हरिजनों के प्रवेश के लिए राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व किया, यह निश्चय ही आधुनिक भारत में मानवाधिकारों के इतिहास में महत्त्वपूर्ण मील का पत्थर है।

इस संदर्भ में नेल्सन मंडेला के भाषण सजीव उदाहरण हैं। उन्होंने कहा कि, ''महात्मा गांधी के नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने एक जबरदस्त अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप विकसित कर लिया है, जिसके अन्तर्गत विश्वभर में उपनिवेशवाद और जातिवाद को समाप्त करने तथा अन्य देशों में स्वतंत्रता आंदोलन के साथ सम्पर्क करने के प्रयास किए गए हैं।''

मानवाधिकार के लिए आंदोलन के संदर्भ में भारत की समृद्ध विरासत रही है, किन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति और मानवाधिकार की सार्वभौमिक घोषणा के वर्षों बाद भी डा. अम्बेडकर के देश में विभिन्न रूपों में मानवाधिकारों का उल्लंघन जारी है।

सत्य एवं प्रेम पर आधारित एक अहिंसक दृष्टिकोण से रोजमर्रा की हमारी अनेक समस्याओं का समाधान हो सकता है और प्रत्येक व्यक्ति को बुनियादी मानवाधिकार सुनिश्चित किए जा सकते हैं आवश्यकता सभी स्तरों पर प्रतिबद्धता और ईमानदारी की है।

हालांकि देश ने हर क्षेत्र में तरक्की की है। लेकिन जब तक हम शिक्षा को बढ़ावा और बेरोजगारी एवं कुरीतियों को दूर कर मानसिकता में बदलाव नहीं लायेंगे, तक तक पूर्ण विकास नहीं हो पायेगा। •

डा. अम्बेडकर एवं नारी उत्थान

• चन्दनमल नवल

मैं किसी समाज की प्रगति का अनुमान इस बात से लगाता हूं कि उस समाज की महिलाओं की कितनी प्रगति हुई है।

– डा. भीमराव अम्बेडकर

साहित्यकारों तथा राजनेताओं ने डा. अम्बेडकर के विराट् व्यक्तित्व एंव कृतित्व को सही रूप में प्रस्तुत नहीं किया। इसलिए लोग उन्हें केवल भारतीय संविधान का निर्माता या दलितों के मसीहा के रूप में ही जानते हैं। बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने केवल दलितो के हितों के लिए ही संघर्ष नहीं किया बल्कि समाज के ऐसे सभी वर्गों के कल्याण के लिए जो भी कार्य किये जो शोषित, उपेक्षित तथा उत्पीड़ित थे। उन्हें जहां भी अन्याय और अत्याचार दिखाई दिया, उसका खुलकर विरोध किया। यह बात सही है कि उस समय दलितो की स्थिति अत्यधिक दयनीय थी। इसलिए उनके उद्धार हेतु उन्हें अधिक परिश्रम करना पड़ा लेकिन समाज के अन्य कमजोर, शोषित एंव उपेक्षित वर्गों के उत्थान के लिए भी जो कार्य वे कर सकते थे, पूरी निष्ठा के साथ किए। अछूत जाति में पैदा होने के कारण अम्बेडकर को अपने जीवन में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा। बाल्यावस्था के कटु सामाजिक अनुभवों ने उन्हें संवेदनशील और निष्ठावान बना दिया। इसलिए श्रमिकों, स्त्रियों, वृद्धों, असहाय, अपंगों, बाल–मजदूरों तथा अनाथों की कठिनाईयों और पीड़ा को डा अम्बेडकर ने अनुभव किया। हिन्दू समाज में अछूतों के साथ अत्याचार इसलिए होता था कि वे निम्न वर्ग के है, परन्तु नारी वर्ग के साथ अत्याचार तो हर वर्ग में हो रहा था। महिलाओं की पीड़ाओं से तो वे इतना द्रवित थे कि उससे मुक्ति दिलाना उनका मिशन बन गया।

स्त्री शिक्षा के सम्बन्ध में बाबा साहब के विचार बहुत क्रान्तिकारी थे। वे मानते थे कि लड़के को शिक्षा देनी चाहिए, साथ ही यदि लड़की को भी शिक्षा दी जाये तो प्रगति तेजी से हो सकती है। उन्होने ज्ञान प्राप्ति को प्रत्येक व्यक्ति का जन्म सिद्ध अधिकार माना। उनका स्पष्ट मत था कि शिक्षा ऐसी वस्तु है जो प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचनी चाहिए। शिक्षा सस्ती हो ताकि निर्धन से निर्धन व्यक्ति भी शिक्षा प्राप्त कर सके। वे स्त्री शिक्षा के बहुत महत्व देते थे। उन्होंने जुलाई, 1942 में नागपुर में भाषण देते हुए कहा कि –**''मैं किसी समाज की प्रगति का अनुमान इस बात से लगाता हूं कि उस समाज की महिलाओं की कितनी प्रगति हुई है।''**

हिन्दू धर्म शास्त्रों को अशिक्षित और अज्ञानी बनाए रखने के लिए कहा गया है–**''स्त्री को शिक्षित करा दो और समझो कि तुमने उसके हाथों में कटार थमा दी है।''** मनु जैसे शास्त्रकारों ने नारियों को शिक्षित करने को पाप और अपराध करार दिया था। इसी कारण नारी जाति अन्ध विश्वास, अन्ध परम्पराओं तथा अज्ञानता से आज भी मुक्त नहीं हो पाई है। ज्योतिबा फूले के बाद नारी शिक्षा को बढ़ावा डा. अम्बेडकर ने दिया। संवैधानिक व्यवस्थाओं के द्वारा बाबा साहब ने नारी शिक्षा में तथा नौकरियों में पुरूष से कन्धे से कन्धा मिलाकर प्रगति की ओर अग्रसर है। नारी समाज बाबा साहब की ऋणी है कि उन्होंने नारी समाज में शिक्षा की चेतना पैदा की। •

दुःख दिया दुःख होत है, सुख दिया सुख होय।

• रूपाराम परिहार

प्रत्येक धर्म इंसान को कर्म करने पर जोर देता है। कर्म तीन तरह के होते हैं।

1. प्रारब्धय
2. संचितय
3. क्रियमाण।

प्रारब्ध कर्म पर हमारा वश नहीं चलता है। प्रारब्ध कर्म हमें विरासत के रूप में मिलते हैं। पूर्व जन्म के कर्मों का परिणाम ही प्रारब्ध है। प्रारब्ध कर्म सामान्य, समारात्मक या नकारात्मक होते हैं। आपका वर्तमान जीवन प्रारब्ध पर टिका रहता है। जैसी भी परिस्थिति हो जीवन को सद्कर्मों के माध्यम से सकारात्मक कर्मों से संचित करें। संचित कर्मों पर हमारा अधिकार रहा है, लेकिन संचित कर्म पर भी भूतकाल का प्रभाव होने की वजह से ये भी हमारे वश में नहीं होते हैं। अब है अधिकार में क्रियमाण कर्म। क्रियमाण कर्म यानि कि हमारी किस्मत बदलने का पक्का जरिया। 'स्वारथ काज अकरम (जो कर्म करने लायक नहीं हो) नहीं करना।

विकार की वजह से व्यक्ति से कुकर्म हो जाता है। कुकर्म का स्वाद मीठा होता है। हर कुकर्म का फल कष्टकारक होता है। संयम, तपस्या, संतोष आदि विकार विजयी तत्वों से मन पर नियन्त्रण कायम हो जाता है। मन पर नियन्त्रण से व्यक्ति से सद्कर्म सम्पन्न होते हैं। सद्कर्म से न केवल खुद का भला होता है अपितु दूसरों का भला भी होता है। खुद की आत्म संतुष्टि तथा दूसरों की दुआ से इंसान आनंदित रहता है। श्री राम शर्मा आचार्य कहा करते थे – 'आप सुधरो, जग सुधरेगा।' भलाई उपदेश देने के लिए नहीं है अपितु करने के लिए है कहने की अपेक्षा कार्य करने में ही उत्तमता है। आलस्य मानव जीवन का परम शत्रु है। आलस्य का त्याग कर सद्कर्मों में इंसान का परम हित है।

सभी धर्म तथा धर्मग्रंथ कर्म करने की शिक्षा ही देते हैं। बेइमानी से कमाया धन व्यक्ति के पास अधिकतम 10 वर्षो तक टिक सकता है उसके बाद वह धन धुएं की भांति उड़ जाता है। बीमारी, केसबाजी, प्राकृतिक नुकसान आदि के रूप में वह धन नष्ट हो जाता है। यदि आप धन व परिवार का गर्व करते हो तो आपको रावण के जीवन का अंतिम परिणाम समझना चाहिए। अनीति का हर काम हमें गर्त में धकेलता है। कहा भी गया है–

अनीति से जात है राज,
तेज और वंश।
तीनों ताला दे गए,
रावण, कौरव, कंस।।

ये नीति की सभी बातें सभी लोग जानते हैं फिर भी विकारों की वजह से अधिकांश लोग वे कर्म कर डालते जिसे हमारी रूह मना करती है। इसीलिए धर्मशास्त्रियों ने कर्म भोगने के लिए नरक की कल्पना की। उसके दुखद स्वरूप को सामने रखकर आत्म असम्मत कर्म नहीं करने की सला दी गई है। कहावत भी है –

जैसी करणी वैसी भरणी।

संत कबीर ने एक दोहा भी रचा है –

कबीर तेरा झोपड़ा,
गलकट्टन के पास।
करेगा सो भरेगा,
तू क्यूं फिरे उदास।।

लोगों का मानना है कि पहले पाप कर्म करो फिर पुण्य कर्म। इससे पाप कर्म हमें भुगतना नहीं पड़ेगा। यह भ्रम हमें पाप कर्म करने के लिए उकसाता है। गंगा में स्नान करने का दर्शन भारत में प्रचलित है। पश्चाताप हमें कर्म फल भुगतने की ताकत देता है। गंगा में स्नान, स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद है। पाप कर्म भुगतान में तो पारिवारिक रिश्ता भी काम नहीं करता है। संत पीपा कहते है–

पीपा पाप मत करो,
अळगा रहिजो आप।
करणी आपरी,
कुण बेटो कुण बाप।।

महत्वाकांक्षी होना बुरा नहीं है लेकिन दूसरों का हक बाधित नहीं हो, इसका ख्याल रखना जरूरी है वरना हमारी हालत वही होने वाली है जो सदियों पूर्व दुर्योधन की हुई थी। जहां तक संभव हो दूसरों का उपकार स्वीकार नहीं करे। क्योंकि दूसरों के उपकार का भुगतान किये बगैर आप मुक्त नहीं हो सकते हो। आप सभी जानते है कि क्रिया की प्रतिक्रिया होती है। यदि आप जीवों को सताएंगे तो आप भी किसी रूप में सताए जाएंगे, आप दूसरों को सुख पहुंचाएंगे तो बदले में आप सुख ही पाएंगे। नीति का एक दोहा है–

षट्शास्त्र, वेद, पुराणा में
बात लिखी है दोय।
दुःख दिया दुःख होत है,
सुख दिया सुख होय।

जैन धर्म के 24वें तीर्थकर महावीर स्वामी कहते हैं – कर्म करने से पहले तनिक विचार कर लो ताकि बाद में हमें पछताना नहीं पड़े। नीति का एक दोहा भी हम इस बात की शिक्षा देता है–

बिना विचारे जो करे,
जो पाछे पछताय।
काम बिगाड़े आपणों,
जग में होत हंसाय।।

भैसाना (पाली, राजस्थान) में श्री आई माताजी पधारे तब वहां के अत्याचारी ग्वालों ने माताजी को मारने के लिए पत्थर ढूंढे तब उन ग्वालों का घमंड कैसे उतरा? उनकी भैंस ही भाटा (पत्थर) बन गई। यह नकारात्मक क्रिया की नकारात्मक प्रतिक्रिया हुई। इसीलिए कबीर ने एक दोहा कहा था–

जो तांको कांटा बुवे,

आर. एन. आई. नं. 40611/62
RNI No. 40611/62

ताहि बोय तू फूल।
तांई फूल को फूल है,
वाको हैं त्रिशूल।।

इस दोहे को साबित किया था जब महात्मा ईसा को सूली पर लटकाया गया तब वहां उपस्थित सभी लोगों ने महात्मा ईसा को दुःख देने का भरपूर मजा लिया फिर भी महात्मा ईसा के उन लोगों को बद्दुआ देने के स्थान पर उन्होंने प्रभु से प्रार्थना की– 'हे! प्रभु इन सभी लोगों को माफ कर देना क्योंकि ये नहीं जानते हैं कि ये क्या कर रहे हैं?' इसीलिए कहा गया है – क्षमा वीरस्य भूषणं।

कर्म प्रधान विश्व में प्रत्येक जीव वैसा ही फल भोगता है जैसा वह कर्म करता है। नेकी कर दरिया में डाल। नेकी को यदि कोई इंसान निगाह में ले आता है तब वह नेकी बंधन बन जाता है। अतः बिना फल की इच्छा के कर्म करने से इंसान का परम भला है।

कबीर ऐसे कर्म करने की सलाह देते हैं जिससे कि व्यक्ति की देह गिरने के बाद भी दुनिया उसके कर्मों को याद कर खुद सुकर्म करने की प्रेरणा ले सके। खुद कबीर साहेब ने एक दोहा रचा था–

जब हम जन्मे तब,
जग हंसा हम रोये।
जब हम मरे तब,
हम हंसे जग रोये।।

महापुरूषों की देह अमर नहीं रहती है। अमर रहते हैं उनके सद् कार्य। उनके सद्कार्यों से इंसानियत का भला होता है। इस इंसानियत के तत्व को हम नमन करते हैं।

हिमायती

हिन्दी पाक्षिक पत्र

अम्बेडकर मिशन का प्रतिनिधि पत्र है। इसे मंगाइये, पढ़िए और दूसरों को पढ़ाइये। इससे जन चेतना जागृत होगी और दलित संघर्ष तीव्र होगा। इसका सहयोग वार्षिक शुल्क 100/- मनीआर्डर से आज ही भेजें–

सम्पादक :
हिमायती
बी 3/9, दूसरी मंजिल,
माडल टाउन-1,
दिल्ली-110009
मो. 9810278936

भारतीय दलित साहित्य अकादमी का अभियान

दलित साहित्य कोर्स करें और दलित साहित्यकार बनें

भारतीय दलित साहित्य अकादमी दलित साहित्य की अभिवृद्धि के लिए और दलित लेखकों, दलित साहित्यकारों तथा दलित साहित्य में विश्व–व्यापक प्रसार करने के इच्छुक अभ्यार्थियों की इच्छापूर्ति के लिए दलित साहित्य के मैट्रिक, बी.ए. व एम. ए. हिन्दी के समकक्ष निम्नलिखित तीन कोर्स प्रारम्भ करने जा रहा है।

1. दलित साहित्य रत्न कोर्स
(हिन्दी के मैट्रिक के समकक्ष)

- **प्रवेश के लिए योग्यता – मैट्रिक या 10वीं पास**
- **शिक्षण अवधि – 6 मास**
- **पंजीयन शुल्क – 500 रु.**
- **शिक्षण शुल्क – 2000 रु. (दो किश्तों में देय)**

2. दलित साहित्य भूषण कोर्स
(स्नातक के समकक्ष)

- **प्रवेश के लिए योग्यता – इन्टर पास या दलित साहित्य रत्न कोर्स उत्तीर्ण**
- **शिक्षण अवधि – 6 मास**
- **पंजीयन शुल्क – 500 रु.**
- **शिक्षण शुल्क – 3000 रु. (तीन किश्तों में देय)**

3. दलित साहित्य प्रभाकर कोर्स
(स्नातकोत्तर एम.ए. समकक्ष)

- **प्रवेश के लिए योग्यता – बी. ए. पास या दलित साहित्य भूषण कोर्स उत्तीर्ण**
- **शिक्षण अवधि – 6 मास**
- **पंजीयन शुल्क – 500 रु.**
- **शिक्षण शुल्क – 4000 रु. (चार किश्तों में देय)**

1. दलित साहित्य रत्न कोर्स
यह हिन्दी की मैट्रिक सर्टिफिकेट कोर्स के समकक्ष होगा और इस कोर्स को पास करने के बाद भारतीय दलित साहित्य अकादमी अभ्यार्थी को **'दलित साहित्य रत्न'** की उपाधि का प्रमाण पत्र प्रदान करेगा।

2. दलित साहित्य भूषण कोर्स
यह हिन्दी के बी.ए. कोर्स के समकक्ष होगा। इस कोर्स को पास करने के बाद अभ्यार्थी को भारतीय दलित साहित्य अकादमी **'दलित साहित्य भूषण'** की उपाधि का प्रमाण पत्र प्रदान करेगा।

3. दलित साहित्य प्रभाकर कोर्स
यह हिन्दी के एम.ए. कोर्स के समकक्ष होगा। इस कोर्स को पास करने के बाद भारतीय दलित साहित्य अकादमी अभ्यार्थी को **'दलित साहित्य प्रभाकर'** उपाधि का प्रमाण पत्र प्रदान करेगा।

कोर्स में प्रवेश के लिए पंजीयन शुल्क 500 रु. एवं शिक्षण शुल्क Online (9891989175) निम्न पते पर भेजकर प्रवेश लें और कोर्स पूरा करके दलित साहित्यकार बनें।

कार्यालय पता :
बी-3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन-1, दिल्ली-110009
(भारत)
मो. 9810278936
9891989175
ईमेल :
jay.sumanakshar@gmail.com

बाबा साहब डा. भीमराव अम्बेडकर का जीवन दर्शन

14 अप्रैल 1891: महू में जन्म

अप्रैल 1893 : मां भीमाबाई का निर्वाण (देहान्त)

अप्रैल 1906 : रमाबाई से विवाह

अप्रैल 1907 : मैट्रिक (दसवीं) उत्तीर्ण

अप्रैल 1912 : ग्रेजुएट

2 फर. 1913: पिता रामजी सकपाल का निर्वाण

1915 : कोलम्बिया वि.वि. अमेरिका से एम. ए. और लन्दन स्कूल ऑफ इकॉनामिक्स से एम. एस. सी.

सितम्बर 1917 : कोलम्बिया वि. वि. से पीएच.डी.

नवम्बर 1918 : सिंडेन्हम कॉलेज बम्बई में प्रोफेसर के पद पर नियुक्ति

जनवरी 1920 : **मूकनायक** मराठी समाचार पत्र का प्रकाशन

जनवरी 1923 : बैरिस्टर और डी. एस.सी. (अर्थ विज्ञान) डिग्री प्राप्त की

जनवरी 1923 : बम्बई विधान परिषद् के सदस्य मनोनीत

जुलाई 1924 : बहिष्कृत हितकारिणी सभा की स्थापना

20 मार्च 1927 : ऐतिहासिक महाड़ सत्याग्रह का आरम्भ

3 अप्रैल 1927 : बहिष्कृत भारत मराठी पाक्षिक की शुरूआत की

25 दिसम्बर 1927: मनुस्मृति का दहन

3 अगस्त 1928 : साइमन कमीशन के सदस्य बनाए गए

2–3 मार्च 1930 : कालाराम मन्दिर (नासिक) प्रवेश आन्दोलन

16 नवम्बर 1930: प्रथम राउण्ड टेबल कांफ्रेंस लंदन ऐतिहासिक भूमिका

29 अगस्त 1931 : दूसरी गोलमेज कांफ्रेंस में शामिल होने लन्दन पहुंचे

24 सितम्बर 1932 : कम्यूनल एवार्ड के खिलाफ गांधीजी द्वारा किये गये आमरण अनशन पर पुणे समझौता

मई 1935 : पत्नी रमाबाई का निधन

जून 1935 : बम्बई गवर्नमेन्ट लॉ कॉलेज में प्रिंसिपल बने

13 अक्तूबर 1935: येवला (नासिक) दलित कॉफ्रेंस में विश्व प्रसिद्ध ऐतिहासिक धर्मान्तरण की घोषणा

1937 : स्वतंत्र मजदूर पार्टी की स्थापना

1940 : थाट्स ऑन पाकिस्तान नामक पुस्तक का प्रकाशन

अप्रैल 1942 : शेडयूल्ड कास्ट फैडरेशन की स्थापना

20 जुलाई 1942 : वायसराय कौंसिल में लेबर मेम्बर नियुक्त

8 जुलाई 1945: पीपुल्स एजुकेशन सोसायटी की स्थापना

20 जून 1946: सिद्धार्थ कॉलेज बम्बई की स्थापना गये

20 जुलाई 1946 : बंगाल विधान परिषद के सदस्य चुने

मार्च 1947 : शेडयुल्ड कास्ट्स के लिए अलग निवार्चन क्षेत्र की मांग

15 अगस्त 1947 : स्वतंत्र भारत में (गैर कांग्रेसी के रूप में) कानून मंत्री का पद ग्रहण

29 अगस्त 1947 : संविधान प्रारूप समिति के अध्यक्ष चुने गये

15 अप्रैल 1948 : कुमारी सविता कबीर से विवाह

22 सितम्बर 1951 : केन्द्रीय सरकार के कानून मंत्री पद से त्याग–पत्र

मार्च 1952 : राज्य सभा के सदस्य चुने गये

5 जून 1952 : कोलम्बिया विश्वविद्यालय से एल. एल.डी. उपाधि प्राप्त की

जून 1956 : सिद्धार्थ कॉलेज आनन्द भवन बम्बई की स्थापना

14 अक्टू. 1956 : नागपुर में लाखों अनुयायियों के साथ 'बौद्ध धर्म' की दीक्षा प्राप्त की

6 दिसम्बर 1956: दिल्ली में महापरिनिर्वाण। •

स्वामी, सम्पादक/ प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर द्वारा वन्दना आफसेट प्रिन्टर्स, A-9 सराय पीपलथला एक्सटेंशन, दिल्ली-33 में मुद्रित तथा रजि. कार्यालय : 233 टैगोर पार्क, माडल टाउन, दिल्ली-9 से प्रकाशित। ❑ सह सम्पादक एवं व्यवस्थापक - जय सुमनाक्षर, मो. 9810278936 **Email-sumanakshar@ymail.com**

नोट : हिमायती में प्रकाशित रचनाओं के लिए सम्पादक की सहमति जरूरी नहीं। हिमायती से सम्बन्धित किसी भी कानूनी कार्रवाई का क्षेत्र दिल्ली न्यायालय तक ही सीमित है।

सम्पादकीय कार्यालय : बी 3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन-1, दिल्ली-110009